301 First Paper: Hora Jyotish Third

अंक मुख्य परीक्षा, १५ अंक आंतरिक परीक्षा, इस प्रकार प्रत्येक प्रश्न १०० अंक का होगा

Maximum Marks: 85
प्रथम इकाई

1. उपमा और अनुमान का सम्बन्ध: आयुष्यदिन दिनचर्या अनुशयों अनुशयों अनुशयों योगिता के काल विभाजन अनुसार (संयोगी कृत अवसर वाक्य श्लोक १ से ७ व ६१ रोग और उपवन्य के 3 कारणों में काल अनुसार एक कारण (अहंग अध्याय १ श्लोक ५२-५३)

2. आयुष्यदिन में शरीर और रोग (संयोगी संहिता शाश्वत स्थानम् अध्याय -२ और ५, सुज्ज स्थानम् अ.-२४):

3. आयुष्यदिन के अनुसार पत्थर, रोगकारों और लक्षण के कार्य:

4. अवसर के अनुसार पत्थर रोगकारों के लक्षण के कार्य:

5. उपयोग प्रकृति और इन्द्रियों की उत्पत्ति का विचार, ज्ञान इन्द्रियों का कथा इन्द्रियों और उनके शरीर में होने के कारण

6. विशेष विनिमय शाश्वत मोहकां दृष्टि पर उपयोग

7. अप्रतिपलित और कर्महीनों के कार्य, चिकित्सा उपयोगी पंचभूततमक जीवाचार

आठवां क्रमपुस्तक के गुण:

1. सार्वजनिक, राजसिक व तामसिक के गुण
2. प्रचलन भूतम व निगुणों में सम्बन्ध
3. वर फित कन्या प्रकृति विज्ञाति के लक्षण
4. वर फित फित कन्या भूमिका

9. तीनवार के दुर्ग के आधार पर रोगों का (अति वल प्रवृत, दोष वल प्रवृत इलायद) सात प्रकार से वरिष्ठयम

(अधीनता २.० से २.५ तक का संन्विभ सुकुं तिलिता शाश्वत स्थानम् अध्याय -२ और ५, सुज्ज स्थानम् अ.-२४)

10. वर की प्रचलन महाभुततमक और सार्वजनिक राजसिक तामसिक प्रकृति का विज्ञात व भूमिका पर दाबाय

11. वर फित फित फित फित अध्याय और सत्त गुणादि अध्याय ,वह चिकित्सा उपयोगी प्रकृति वृहत्जातक अ.-२५ एवं सारस्वती अ. ३८ गुण व फल फलायाय

12. चिकित्सा के सोतह अंग एवं शेष चिकित्सक के गुण निर्धारण से द्वारा (अंत्यां सं. सुज्ज स्थानम् अ.-२ श्लोक २० से २५ और अनुसंधान ३७ ३८)

13. चिकित्सा में प्रतिकृत यह यह (अंत्यां सं. शाश्वत स्थानम् अ. २२ श्लोक १४ ), २७ नक्षत्र अनुसार रोगों शासन की समीकृति (अंत्यां सं. विनोद स्थानम् अ.६, श्लोक २९ से ३२ तक).

द्वितीय इकाई

पारंपरिक चिकित्सा विज्ञान अनुसार शरीर की प्रणालियाँ (सिस्टम्स) और अंगों का, प्रत्येक पर लगभग ५ शब्दों से २५० शब्दों तक लिखने योग्य, संक्षिप्त टिप्पणी या सामान्य पुनःविचार

10.5.13
(4) 1. परिसंचरण तंत्र 2. हदय 3. हदय चक 4. हदय रोध व हदय निकास 5. रक का परिसंचरण 6. हदय आयुक्त शोथ 7. अल्टैडैय शोथ 8. कारोनी धमनी रोग 9. मूत्सू रक संकुल हदय पात 10. हदय संरध 11. हदय संरध 12. हदय संरध 13. हदय संरध:

(ख) 1. रक की संरचना 2. हिमोमोलीबन शैत रक कोशिकाएं एवं रक के वर्ग 3. रक के कार्य 4. रक चाप 5. अहंकार 6. हिमोमरिन, अस्ति रक, रक का अल्फा रक

(ग) 1. आयुक्त के कार्य 2. जाल के कार्य 3. फ़ॉर्टी अंत 4. वडी अंत 5. वडी अंत के कार्य 6. वडी अंत के कार्य 7. अवधारण 8. पाचन ताल के कुछ रोग 9. अणावल मार्ग का संदर्भ परिचय 10. कुम्फ्यूस के कार्य

(घ) वाहिनी विश्वास वंशियां

(ङ) जगू जनन तंत्र, संरचना 2. क्रुर पथ के अंग और क्रुर के कार्य

(च) के देशी द्वारात्मक भौतिक तंत्र 2. स्वचालित तंत्र 3. अनुक्रम 4. परस्त्रक्रम 5. तंत्र संरध

(छ) विज्ञान शास्त्र 2. विज्ञान शास्त्र व वृषण 3. ऐतिहासिक 4. पूर्व के वाहिनी नीलोमेंज

तुलीय इकाई

1. (क) काल पुरुष की अवधारणा, राशि चक एवं बार्लो भावों का काल पुरुष की शरीर संरधना से समक्ष 2. समस्त नीलों का शरीर के अंग से समक्ष (बुधत पार्श्व, पश्चिम विश्वास अवधारणा 38, 39, 51) 3. तंत्र संरधना और शरीर की अंग 4. राशियों का अंग जल आदि तत्त्वों के अनुसार एवं चर आदि अनुसार शरीर अंगों पर अवधारणा

(ख) 1. राशियां व रोग 2. शाह व रोग 3. तात्क व रोग (बुधत पार्श्व, पश्चिम जाय फलात्मक फल्टीफिक अ 14 गोपक चालिजात अ. 2 तथा गदावली अ. 1. 3. यह का राशि स्थिति अनुसार रोग 4. तात्क व शरीर के अंग और रोग

फलीय इकाई

(क) 1. रोग निदान (दायग्रामिक) के आयङ्गर मूल संदर्भ तथा इनका व्याख्यातिक उपयोग

1. रासायनिक अधिक द्वारा द्वितीय समय भाव, भावना वालाय यह इनसे संबंध ग्रह, इनसे संबंध ग्रह, नक्त्र व आयु संदर्भ के स्थान यह:

1. द्रूत जड़ की भूमिका, निर्देश यह की भूमिका, मारक यह की भूमिका, कूट जन्मांश की भूमिका, आयुद्ध की भूमिका

2. (क) प्रज्ञानों के संदर्भ में यह दे की रोग निदान में भूमिका, तथा (ख) उत्तरांश आयु में रोग विवाद भाव के अवधारणा 3. में वर्णित विद्याओं के यह योगों में से चुनें हुए कुल 12 घमुखान योग का संक्षिप्त विवेचन

3. आलोचक की और रोग

4. द्वारा जनों के आयङ्गर पर रोग निदान

5. लोकां मूल संदर्भ से पश्चिम अवधारणा से रोग निदान

(ख) 1. रोगों का सहज रोग और अनुक्रम रोग के आयङ्गर पर पुनः भर्तिकरण इसके अंगित केवल वोट दुर्लभता से विशेषाधिक क्रम यह योगों का संक्षिप्त विवेचन

रोग को रोगों की साध्यता और असाध्यता 3.रोग उपलब्ध के संभावित समय विवेचन में भिन्नता दशा- आयुद्ध की भूमिका, गोष्ट की भूमिका

[Signature: 10th July 2013]
(3) यह भाव में कृत्रिम ब्रह्म की स्थिति का (बृहत् पराशर अः १८ श्रेणि १२-१३) एवं शुभ-भ्रम की स्थिति का श्रेष्ठ पर प्रभाव के का विवेचन.
(5) कृत्रिम ब्रह्म की स्थि, राशिवर्ग, राशिगत भाव के जीव-तत्त्व को हानिप्रद, नादी ग्रह्य के इस सिद्धांत का परिपक्वान।

संक्षेप हृदयान:
राशिशिलावर्ग गणों के सामाजिक १.पात्रात्मक चिकित्सा शास्त्रीय कारण व लक्षण, २.आयुर्विकार कारण व लक्षण
(२) वर्णन और ३. उत्तमतिक विज्ञान के अनुसार इन रोगों के ग्रोहण का वर्णन एवं ज्ञान गोत्रिक में इन
रोगों की पहिच्छान का, व्याख्यातिरंजन अध्ययन: १. रक्त चांप २. इंद्र रोग ३. मधुमेह ४. कैसर ५. दमा
(२) गिफ्ट ६. अवसाद
(२) रसोनोवरर
(२) विशेषतः दशस्तराध्यावनुसार रोगकारक ब्रह्म की शांति हेतु मंत्र व दान निर्णय
(२.२) लघु, प्रायाधृत कम्यो, दमन समाध्य निर्धारण
(२.३) वैद्य-शास्त्र, यह वर्तन-दान से होगा या ग्रहण-धारण से, इसके विभिन्न मत-विस्तारों का संबंध
(२.४) यह चाहे भ्रम से विवाह से रोग निवारण
प्रायम हकाई

सी जातक : १-बुध तरसरी अय्याय ८३; २-फल दीपिका मो.कु.ओझा कृष्ण देवीका अय्याय ११; ३-कलावर्भ विचार-फलदीपिका अय्याय १०.तथा ४- विद्यानम जन्म के योजना जातक" के सीजातक अय्याय के क्षेत्र १ से १८ तक

द्वितीय हकाई

निषेक प्रकरण , गर्भास्थ शिशु कृ ठवास्थक : मण वंदकत योगा , पृथु पुज्य योगा , जुड्यांत संतत योगा , दादर्णात आदि त्र प्रसूति लिपि का अनुमान भावाय विधि से गत मासिक चक ठहराव के लिये (तारत मेंसी.पाज ) और व्यक्तक भाविक चक की दिनार्थक के आधार पर अपेक्षित प्रसूति दिलांक (ई.डी.डी.) का अनुसूचा. गर्भ मासी पर गह-पायाव; गर्भवीणि माता का स्वास्थ्य-बुध जातक निषेक अय्याय अय्याय ५ ; जातकादेशहीणार्म अय्याय २ का निषेक प्रकरण.

तृतीय हकाई

पृथु भाय फल विचार-कलदीपिका बारहवार अय्याय: दिवा जिवा र तथा संताल जिता प्रकरण जातक देश मार्ग अय्याय १५ एवं १६ : तथा संताल शाप विचार-बुध पाराशर होसा. अय्याय ८६.

छठुष हकाई

१.वातारिक विचार: बुध पराशरहोरा अय्याय १०; जातकदेश मार्ग अय्याय ३ तथा सारावली अय्याय १०.

२.अरिक भंग विचार बुध पाराशर होसा अय्याय ११; अरिक भंग विचार; सारावली अय्याय १२; एवं जातकदेश मार्ग अय्याय ४.

पंचम हकाई

(१).पर कल्प का कल्प पत्रिका में कल्प दोष विचार कल्प का कल्प पत्रिका में माँगल्य (सीभाया) विचार , वर कल्प का पत्रिका में ससम और अन्य भाय ,कारक गाँधु शुभ आदि विचार, दामप्राप्त गाँधु शुभ न्यूनता,वैधता , सीभाया योग.विचार.

(२).विवाह-मोनाल प में अथ कूट विचार, अथकूट दोष परिहार नियम,

(३) विवाह मोनाल में कु ज दोष विचार . मंगल निर्मल राह केवु और सर्व इन कृप कहले के दोष से लापर्व व सामान्य नियम; भाय शिखति अनुसार दोष की न्यूतिकता का क्रम, कु ज दोष के अपवाद व इन अपवादों की विवेचना, मंगल की राशिविशेष में नियति से कु ज दोष परिहार की विवेचना.

[Signature]
10.4.18
प्रथम इकाई

1. उपन्यास अध्याय
2. सांबत्तर सूत्र अध्याय
3. आदिविध्वार अध्याय
4. चंद्रचार अध्याय
5. राहुचार अध्याय
6. चौँमचार अध्याय

द्वितीय इकाई

ूधचार अध्याय
गुरुवार अध्याय
शुकुचार अध्याय
शुक्लियार अध्याय
केतुचार अध्याय
अगस्त्यचार अध्याय

लक्ष्मण कूमे विभाग अध्याय का राष्ट्र व लगर
के भविष्य कथन में रूपांतरिक प्रयोग

तृतीय इकाई

(क)
1. यह युद्ध अध्याय
2. यह श्रंगाटक अध्याय
3. शशि यह समाजम अध्याय
4. भुक्कुंप लक्षण अध्याय

(ख)
1. वृष आयुर्विद अध्याय
2. दृष्टान्त (भूमित्व जलजाल) अध्याय

[Signatures and dates]
चतुर्थ इकाई

वर्ष संवंधी ग्रह योग :
1.वर्षीय ग्रह लक्षण अध्याय
2.ग्रह धारण अध्याय
3.प्रथम अध्याय
4.सदीय अध्याय
5.रोहिणी, स्वाति, आचार्य योग अध्याय
6.प्राचीन अध्याय
7.भारतीय बौद्ध विश्लेषण के मानसूनी वर्ष संवंधी मापदंडों का संक्षिप्त सामान्य परिचय

पंचम इकाई

शकुन से भविष्यवत्ता :
1.शकुन अध्याय
2.शकुन-फलादेश के कुछ और नियम शाकुलेय अध्याय श्रेणी के से 11 तक
3. आगत की आकृति य नाम आदि का ज्ञान शाकुलेय श्रेणी 12 -17
4.प्रश्न कहीं की चेतावनी से भविष्य कथन : अंग विषय अध्याय.

-----------------------------

मुख्य ग्रन्थ

चराहमिहिर विषयविशिष्ट बहुत संहिता

सन्दर्भ ग्रन्थ

1.भद्र बाहु संहिता
2.लादंड संहिता
3.सोहनियल कृत मंडेल एस्ट्रालाजी

[Signature]
10.04.13